17 फरवरी 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 22 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भोपाल-विदिशा मार्ग पर दीवानगंज में निर्माणाधीन ज्ञानोदय तीर्थ में -

वेदी शिलान्यास संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ भोपाल-विदिशा मार्ग पर दीवानगंज में निर्माणाधीन ज्ञानोदय तीर्थ में दिनांक 30 व 31 जनवरी, 2016 को वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जे.के. जैन (रायसेन कलेक्टर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विमलकुमारजी श्रीमती कुसुमजी नीरु कैमिकल्स दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्वत्गणों के अतिरिक्त श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष-महासमिति), श्री अजितजी बड़ौदा, श्री महिपालजी बांसवाड़ा, श्री गुलाबचंदजी सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर, श्री राजेशजी जैन (कलेक्टर गुना), श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर, श्री सुशीलजी काला इन्दौर, श्री सुखदयालजी देवड़िया केसली, श्री सुनीलकुमार संजयकुमारजी सर्राफ सागर उपस्थित थे। कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल द्वारा हुआ।

महोत्सव में शिखर शिलान्यास श्री विमलकुमारजी श्रीमती कुसुमजी नीरु केमिकल्स दिल्ली द्वारा संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त सुदर्शन मेरु का शिलान्यास श्री गुलाबचंद सुभाषचंद अशोककुमार सुधीरकुमार सुभाष ट्रांसपोर्ट परिवार सागर ने, विजयमेरु का शिलान्यास श्री सुखदयालजी देवड़िया इन्दौर ने, अचल मेरु का शिलान्यास श्री अशोकजी विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने, मंदरमेरु का शिलान्यास श्री महेन्द्र-किरण चौधरी भोपाल व श्री अजितकुमार संजयकुमार राकेशकुमार मोदी परिवार ने एवं विद्युन्माली मेरु का शिलान्यास श्री सुनीलकुमार संजयकुमारजी सर्राफ सागर व श्री राजेन्द्रकुमार अशोककुमार नरेन्द्र कुमार मोदी परिवार ने किया।

इस अवसर पर इन्दौर, उज्जैन, बड़नगर, सागर, जबलपुर, कोरबा, कटनी, खंडवा, सनावद, अशोकनगर, छिन्दवाड़ा, टीकमगढ, रतलाम, मुम्बई, नागपुर, गुड़गांव, बड़ौदा, विदिशा, गंजबासौदा, बांसवाड़ा, भोपाल आदि विभिन्न स्थानों से लगभग 2 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पूर्ण हुये।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में 35वें बैच के छात्रों का -

दीक्षांत समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 फरवरी को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 35वें बैच के शास्त्री तृतीय वर्ष के 35 छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रातः पंचतीर्थ जिनालय पर भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के अवसर पर विशेष जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 50वें वर्ष में पदार्पण को लक्ष्य में रखकर हॉल की सजावट की गई थी। इसमें डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित सभी ग्रन्थों की प्रदर्शनी तथा उनके जीवन को प्रदर्शित करने वाले संस्मरणों को झांकी के रूप में प्रदर्शित किया गया था।

कार्यक्रम दो सत्रों में संपन्न हुआ। प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि श्री सुशीलजी गोदीका एवं द्वितीय सत्र के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील थे। सभा में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री अशोकजी वैभव छिन्दवाड़ा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल एवं विदुषी प्रतीति पाटील महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र तथा महाविद्यालय में व्यतीत अपने पांच वर्ष को अपना स्वर्ण काल बताते हुये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने जीवनपर्यंत स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प भी लिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिनवाणी को पढकर, पढाकर अपने जीवन में उतारना ही वास्तविक लाभ है। यही मुक्ति प्राप्ति का साधन है।

ब्र. यशपालजी ने सदैव अनुशासन प्रिय व उत्साही बने रहने की प्रेरणा देते हुये कहा कि जीवन में औपचारिकता को बढावा न देते हुये मूल कार्य पर ध्यान देना चाहिये।

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वैसे तो सभी बालक जन्म से मुट्ठियाँ बाँधे ही आते हैं, परन्तु उनसे जो बालक हुआ, उसकी दायें हाथ ही मुट्ठी कुछ इस तरह बन्द थी कि खुलती ही नहीं थी। जब भी खोलने का प्रयत्न किया जाता तो वह जोर-जोर से रोने लगता था। अन्ततोगत्वा उन्होंने उसके हाथ का ऑपरेशन कराने का निश्चय किया। जाँच-पड़ताल के बाद डॉक्टर ने ऑपरेशन से इन्कार करते हुये मनोचिकित्सक को दिखाने की सलाह दी।

मनोचिकित्सक ने बालक के भयाक्रान्त चेहरे और रोने की आवाज से बन्द मुट्ठी के रहस्य का बहुत कुछ अनुमान तो कर ही लिया था। शेष रही-सही शंका को दूर करने के लिये उस बालक के माता-पिता से मनोरंजन के मूड में कुछ अकड़कर पूछा -'तुम्हारा धंधा क्या है ?'

सकपकाते हुये दबे स्वर में बालक का पिता बोला - 'आप....आपकी जो फीस हो, हम देने को तैयार हैं। आप हमारा धंधा जानकर क्या करेंगे ?

अभयदान देते हुये गंभीर स्वर में डॉक्टर ने कहा -'चिन्ता मत करो, हम पुलिस वाले नहीं हैं, हमें बताने में तुम्हें कोई खतरा नहीं है।'

वंशपरम्परागत संस्कारों से अवगत हो डॉक्टर ने बालक की मनोवृत्ति पहचानकर अपने गले की सोने की चेन उतारकर ज्यों ही बालक को दिखाई कि बालक ने अपने पैतृक संस्कारवश सोने की चेन को देखते ही मुट्ठी की अंगूठी फेंक दी और चेन पकड़ ली।

यह वही अंगूठी थी, जिसे प्रसूति के काल में दाई की अंगुली से गिरते ही बालक ने मुट्ठी में दबा ली थी। क्यों नहीं दबा लेता ? चुहिया का बच्चा भी तो जन्मजात जमीन खोदना व बिल बनाना जानता है।''

इसप्रकार सरस और हृदयस्पर्शी प्रवचन करते हुये आचार्यश्री ने आगे कहा -''यदि हम अपनी संतान को दुराचारी नहीं देखना चाहते हैं, तो हमें अपने दुराचारों को तिलांजलि देनी होगी और अपने बच्चों को सदाचार के संस्कार देने होंगे।''

अपने प्रवचन को जारी रखते हुये आचार्यश्री ने कहा -

''दूसरे कुछ संस्कार ऐसे भी होते हैं, जो हमारे पूर्व भव-भवान्तरों से हमारे साथ आते हैं। राजुल-नेमीकुमार की विगत नौ भवों की पुरानी प्रीति, कमठ और पार्श्वकुमार का पुराना इकतरफा वैर-विरोध तो आगम सिद्ध व लोक प्रसिद्ध है ही; और भी ऐसे अनेक पौराणिक उदाहरण हैं जो पूर्वभवों से चले आ रहे संस्कारों को सिद्ध करते हैं।

देखो न ! वह ब्राह्मणकन्या, जिसे दैवयोग से उन्हीं दिगम्बर जैन साधु के दर्शन का सौभाग्य मिल गया जो उसके पूर्वभव (वायुभूत) के मामा थे। साधु को भी उसे देखते ही पूर्व संस्कारवश धर्मस्नेह उमड़ आया था। अत: उन्होंने उसे पात्र जानकर उसके कल्याण की भावना से पांच अणुव्रत दे दिये थे।

जब यह बात उस बालिका के पिता को पता चली तो वह पुत्री से नाराज हुआ। नाराजगी का कारण व्रत ग्रहण करना नहीं, बल्कि जैन साधु से व्रत ग्रहण करना था; क्योंकि उसमें जैनत्व के संस्कार नहीं थे, इस कारण उसके अन्तरात्मा को जैन साधु के द्वारा दिये गये व्रत स्वीकृत नहीं हो सके। उसने बेटी से आदेश की मुद्रा में कहा -''बेटी ! तू ये व्रत छोड़ दे।''

बेटी की हार्दिक भावना उन व्रतों को छोड़ने की नहीं होते हुये भी वह पिता की आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकी। अत: वह पिताजी से विनयपूर्वक बोली -''पिताजी ! साधु महाराज ने कहा था कि यदि तेरे पिता को ये व्रत पसंद न आवें तो वहीं घर बैठे मत छोड़ देना, मेरे व्रत मुझे वापिस कर जाना। अत: यदि आप इन्हें छुड़वाना ही चाहते हैं, तो उन्हीं मुनिराज के पास चलकर मैं ये व्रत उन्हें वापस करूँगी; क्योंकि मैं उन्हें वापस करने का वचन देकर आई हूँ।''

बेटी के अनुरोध पर पिता पुत्री को लेकर मुनिराज के दिये व्रतों को उन्हें वापिस लौटाने के लिये जा रहा था कि रास्ते में उन पिता-पुत्री ने एक के बाद एक चार ऐसी घटनाएँ देखीं, जिनमें क्रमश: एक को हत्या के अपराध में फांसी, दूसरे को असत्य भाषण के अपराध में जिह्वाछेद, तीसरे को चोरी के अपराध में आजीवन कारावास और चौथे को बलात्कार के अपराध में लोहे की गर्म शलाकाओं से दागने का दण्ड दिया जा रहा था।

बेटी ने कहा - ''पिताजी ! मैंने तो इन्हीं सब पापों के त्याग के व्रत लिये हैं। इसमें मैंने क्या बुरा किया है ? क्या इन पापों को करके मुझे भी ये दु:ख नहीं भोगने पड़ेंगे ? अत: आप मुझे इन व्रतों को छोड़ने के लिये बाध्य न करें।''

''अच्छा ! ठीक है, व्रत मत छोड़ना, परन्तु वहाँ तक चल तो सही, उस साधु को इतना उलाहना तो दे ही आवें कि मेरी बेटी

को ये व्रत दिये सो दिये, परन्तु अब तुम आगे भविष्य में किसी को इस तरह व्रत वगैरह देकर बहकाने की कोशिश नहीं करना।''

ज्योंही उस कन्या के पिता ने जैन मुनि से उलाहना देते हुये कहा –''महाराज ! आपने मेरी बेटी को मेरी अनुमति के बिना ये व्रत देकर अच्छा नहीं किया। यह तो कोई बात नहीं, पर...।

''पर क्या ?'' कहते हुये करुणासागर मुनिराज बोले –''हे यज्ञदत्त ! तुम्हारा कहना सत्य है कि माँ–बाप को सूचित किये बिना कोई व्रतादिक देना योग्य नहीं है। परन्तु मैंने तो अपने भानजे को व्रत दिये हैं, तेरी बेटी को नहीं।''

यह सुनकर यज्ञदत्त आश्चर्यचकित होकर बोला –''महाराज! हमने तो सुना था कि जैन साधु सत्य महाव्रत के धारी होते हैं। ये आप क्या कह रहे हैं? क्या यह मेरी बेटी नहीं हैं ?''

यज्ञदत्त के ऐसा कहने पर मुनिराज ने बेटी के माथे की ओर हाथ पसार कर कहा –''हे वायुभूत ! मैंने तुझे तेरे पूर्वभव में जो–जो पढ़ाया था, उसे यथावत् सुना।''

इतना सुनते ही उस कन्या को 'जातिस्मरणज्ञान' हो गया, जिसमें उसे अपने पूर्वभव वायुभूत की पर्याय में मामा के पास पढ़ा हुआ सम्पूर्ण जिनागम का सार स्मृतिपटल पर प्रत्यक्षवत् प्रतिभासित होने लगा।

ज्योंही उसने अपने पूर्वभव में पढ़े हुये संस्कृत–प्राकृत भाषा में आध्यात्मिक छंद गा–गाकर सुनाना प्रारम्भ किया, जिन्हें कभी न उस लड़की ने सुने–पढ़े थे और न उसके पिता ने। अत: उन्हें सुनकर उसका पिता आश्चर्यचकित तो हुआ ही, गद्गद् भी हो गया।

जब अनन्तमती का पिता पानी–पानी हो गया तो मुनिराजश्री ने उसे उसकी पुत्री के पूर्वभव का सारा वृत्तान्त बता दिया, जिसे सुनकर यज्ञदत्त बहुत प्रभावित हुआ और मुनिश्री का नानाप्रकार से बहुमान प्रगट करता हुआ कृतज्ञता प्रगट करने लगा।

आचार्यश्री ने अपने प्रवचन का उपसंहार करते हुये कहा – ''यदि हम भी अपनी संतान को सुखी, समुन्नत, सदाचारी और सब तरह से समृद्ध देखना चाहते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम भी उनमें ऐसे ही धार्मिक व नैतिक संस्कार डालें जैसे वायुभूत के मामा ने अपने भानजे में डाले थे।

देखो, अपने किसी कुटिल परिणाम के फलस्वरूप वायुभूति स्त्री पर्याय में चला गया, तथापि उसके पुराने संस्कारों के कारण उसे पुन: सन्मार्ग मिल गया।

कदाचित् वायुभूत भी अपने भाई अग्निभूत की ही भाँति संस्कारविहीन रह जाता तो आज उसका क्या होता ?''

ज्ञान बैठा–बैठा सोच रहा था – ''महाराजश्री ठीक ही कह रहे हैं। देखो न! विज्ञान भी तो अपने दादाश्री द्वारा प्रदत्तबाल्यकालीन संस्कारों के कारण ही तो इस ओर आकर्षिक हुआ है, अन्यथा किसी की क्या ताकत जो उसे इस मार्ग पर ले आता।''

जंगल में जमीन पर पड़े हुये वृक्षों के बीज जिस तरह हवा–पानी पाकर अपने आप अंकुरित हो जाते हैं, उसी भाँति प्राणियों के जन्म–जन्मान्तरों के पूर्व संस्कार अनुकूल वातावरण पाकर विकसित हो जाते हैं। यदि जमीन में बीज ही न पड़ा हो तो अकेला हवा और पानी आदि का बरसाती वातावरण क्या कर सकता है ? चिंगारी ही न हो तो अकेली हवा और ईंधन अग्नि का उत्पादन नहीं कर सकते।

धन्य हैं वे माता–पिता जो अपनी संतान को भौतिक धन–वैभव के साथ–साथ धर्म के संस्कार भी दे जाते हैं, णमोकार मंत्र भी दे जाते हैं और दे जाते हैं नित्यबोधक जिनवाणी, जिसे होनहार बालक समय पाकर पढ़ते हैं और लाभान्वित होते हैं।

जिनवाणी इस अर्थ में नित्यबोधक है कि उसे जब जी चाहे उठाकर पढ़ा जा सकता है। इस कलिकाल में जब कि सर्वज्ञदेव की दिव्यध्वनि तो दुर्लभ है ही, सच्चे गुरु भी हरसमय उपलब्ध नहीं हो सकते; क्योंकि उनकी वृत्ति स्वाधीन है, अत: सहजता से उनका समागम भी संभव नहीं है और रात में तो वे बोलते भी नहीं हैं। ऐसी स्थिति में एक जिनवाणी ही तो हमारे लिये शरणभूत है। पता नहीं जिनवाणी कब–किसके लिये विज्ञान की तरह वरदान बन जावे। सुषुप्त संस्कारों को जगाने वाली जिनवाणी ही तो है। विज्ञान के सुषुप्त संस्कार भी तो सत्साहित्य के अध्ययन से ही जागृत हुये हैं, अन्यथा वह तो कभी मन्दिर भी नहीं जाता था। बस, इतनी गनीमत समझो कि वह प्रतिदिन प्रात:–शाम घर पर ही णमोकार मंत्र की माला फेर लेता था। सो वह भी पिताजी की दी हुई विरासत समझकर। मात्र उन्हें सम्मान देने के लिये, अन्यथा उसे तो मानो धरम–करम से कुछ सरोकार ही नहीं था।''

यह सोचते–सोचते ज्ञान ने संकल्प किया कि –''अब मैं इसी धार्मिक संस्कारों के प्रचार–प्रसार के काम को सर्वाधिक महत्व दूंगा। इससे बढकर दुनिया में और कोई काम नहीं हो सकता।''

(क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

स्वर्ण जयंती के मायने

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

टोडरमल स्मारक भवन का स्वर्णजयन्ती वर्ष प्रारम्भ हो रहा है, यह कोई साधारण घटना नहीं; यह एक ऐसा अत्यंत दुर्लभ और असाधारण अवसर है, इतिहास में जिसका सानी दुर्लभ है।

युग के प्रचंड प्रवाह के विपरीत एक महाअभियान की परिकल्पना मात्र दुर्लभ है, जनसाधारण से लेकर अत्यंत उत्साही और साहसी चिंतक तक जिस विचार मात्र को शेखचिल्ली के ख्वाब कहकर कूड़ेदान में फेंक दें, ऐसे एक विचार को क्रियान्वित करना, उसका सफल संचालन करना और उसे शिखर तक पहुंचा देना !

''भागीरथ प्रयास'' का खिताब भी इसके लिये एक संज्ञा है; क्योंकि भागीरथ तो गंगा को ऊपर से नीचे की ओर लाये थे पर यह तो बंगाल की खाड़ी से गंगा को गंगोत्री तक ले जाने जैसा असाध्य कार्य है। भौतिकवाद के प्रचंड वेग से आंदोलित इस शुष्क जगत में अध्यात्म की मात्र गम्भीर चर्चा ही नहीं करना वरन उसे जन–जन की वस्तु बना देना एक अत्यंत असाधारण कार्य है, जिसकी कल्पना मात्र विस्मित कर देने वाली है।

एक ऐसा युग जिसमें मात्र अर्थदायिनी विद्या का जादू ही सर पर चढकर बोल रहा हो, उस जगत में भवनाशक इस अध्यात्म विद्या की शिक्षा का ऐसा प्रचार किसी आश्चर्य से कम नहीं।

खेत में मात्र बीज डाल देने को खेती नहीं कहते हैं, बोने से लेकर फसल पककर, कटकर खलिहान और बाजारों तक पहुँच पाने तक, समस्त संभावित व असंभावित विपत्तियों के बीच फसल की रक्षा करना, उसके लिये समय पर खाद–पानी का इंतजाम कर पाना एक बड़ी साधना है।

किसी कार्य को (अभियान को) प्रारम्भ कर देना एक बात है और उसे दीर्घायु प्रदान करना दूसरी बात।

इतिहास गवाह है, दुनिया में अनेकों अच्छे कार्य प्रारम्भ हुये और कालकवलित हो गये, वे ज्यादा समय तक चल नहीं सके, क्यों ?

क्योंकि उनमें जीवनी शक्ति नहीं थी, उनके पीछे सफलता के लिये आवश्यक रीति–नीति नहीं थी, योजना नहीं थी, संकल्प की दृढता, समर्पण और इच्छाशक्ति का अभाव था।

टोडरमल स्मारक के द्वारा प्रारम्भ किये गये तत्त्वप्रचार के उपक्रम 50 वर्षों से आज तक सफलतापूर्वक चल रहे हैं, इसका मतलब यही है कि उसके कर्ता–धर्ताओं के अन्दर उक्त सभी गुण विद्यमान हैं।

कोई अच्छा कार्य करे या न करे, कर पाये या न कर पाये, उसमें कुछ भी करने की क्षमता, साहस या इच्छा हो या न हो; पर यदि कोई अन्य व्यक्ति कोई अच्छा कार्य कर रहा है तो मीनमेख करने वालों की समाज में कमी नहीं है। महान कार्यों की प्रशंसा, अनुमोदना, समर्थन या सहायता करने वाले भी समाज में दुर्लभ ही हैं पर हाँ ! उन कार्यों में या कोई छिद्र दिख जाये तो छिद्रान्वेषण करने वालों कीजगत में कमी नहीं है। भले–बुरे के विचार से बेखबर, समाज के हित–अहित की चिंता से परे ऐसे लोग उन कार्यकर्ताओं पर ऐसे टूट पड़ते हैं मानो उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य ही मिल गया हो।

ऐसा होने पर भी अन्य सभी लोग चुपचाप बैठे–बैठे इसप्रकार तमाशा देखते रहते हैं मानो कुछ हुआ ही न हो या कुछ अतिउत्साही लोग अवसर का फायदा उठाने के फेर में बंदरबांट की नीति पर चलने को प्रेरित होने लगते हैं।

उक्त सभी प्रकार की स्थितियों में यह कोई नहीं सोचता है कि उक्त कारणों से काम करने वाला काम करने से विरक्त हो गया तो नुकसान किसका होगा ? क्या समाज उनकी, उनके जैसी सेवाओं से सदा के लिये ही वंचित नहीं हो जायेगा ? यदि ऐसा हुआ तो इस समाज के प्रति इस महान अपराध का जिम्मेदार कौन होगा ?

एक बात तो तय है, यह तो एक स्थापित तथ्य है कि देश और समाज के हित में कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमें मात्र एक अकेला होता है, अन्य लोग अपने आपमें अपने तरह के कितने ही विशिष्ट क्यों न हों; पर रवे अन्य के पर्याय नहीं होते हैं, नहीं हो सकते हैं, ऐसे में एक व्यक्ति के रुक जाने के बाद या चले जाने के बाद कोई उसके स्थान की पूर्ति नहीं कर सकता है।

उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुये क्या यह उचित नहीं होगा कि यदि हम स्वयं कार्य न कर सकें, होने वाले कार्यों का सक्रिय समर्थन भीन कर सकें तो कम से कम उन कामों में अड़चनें डालने वालों का समर्थन तो न करें, उन्हें हतोत्साहित तो करें।

यदि हम इतना भी कर पाये तो हमें सन्तोष होगा कि आखिर मैं एक अच्छे कार्य को अकाल में ही कालकवलित होने से बचा लिया। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पण्डित शांतिकुमारजी ने कहा कि धन्य हैं वे लोग जिन्हें जिनवाणी का बोध प्राप्त हुआ है, उनसे भी धन्य वे लोग हैं जो जिनवाणी के निमित्त से अपने स्वभाव का आश्रय लेकर धर्मरूप परिणत होते हैं। आपकी पहली धन्यता तो हो गई है, दूसरी धन्यता भी जीवन में शीघ्र प्रगट हो।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने मार्गदर्शन एवं मंगल आशीर्वाद देते हुये कहा कि अध्ययन की गंभीरता व निरंतर स्वाध्याय से ही विद्वत्ता बनती है, अत: जीवन में प्रतिज्ञाबद्ध होकर स्वाध्याय करें तथा जिस विषय को हमने पढा हो, उसे पढाने से और गहराई एवं गंभीरता आती है।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि अपना विजन आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है; क्योंकि आज तक आप एक अतिसंरक्षित माहौल में रह रहे हैं और अब कल से आपको खुले आकाश की चुनौतियों से रूबरू होना है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने कहा कि मुझे अपने विद्यार्थियों के तत्त्व संबंधी रुचि में रंचमात्र भी शंका नहीं है। तत्त्वअध्ययन अध्यापन युक्त जीवन में विवेक तथा सहिष्णुता से ही कार्य संभव है। यदि परिस्थिति विपरीत बने तो उसमें उलझने की बजाय शांत रहना ही सुलझने का मार्ग है।

शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने दादाद्वय के हाथों से स्वर्णजयंती वर्ष के प्रारंभ प्रसंग पर धर्मचक्र को स्वीकार करते हुये आजीवन जिनवाणी के प्रचार–प्रसार की प्रतिज्ञा की।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनंचदजी भारिल्ल के अभिनन्दन–ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया। सभी मंचासीन महानुभावों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुये उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें दीं।

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट (रजि.) नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

विशुद्ध अध्यात्म के प्रचार–प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का अग्रणी संस्थान

७ वी पास प्रतिभाशाली बालको के लिए स्वर्णिम अवसर !
साक्षात्कार शिविर : १४ से १७ अप्रैल २०१६

प्रतिभा पात्रता
प्रथम श्रेणी में 7 वीं कक्षा पास
जैनधर्म के संस्कार
पालन में अभिरुची

- लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
- इंग्लिश, सेमीइंग्लिश माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्युटर आदि विषयों की कोचिंग
- व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, योगा, खेलकूद, भ्रमण एवं कैम्प का आयोजन

आत्मार्थी पालक ध्यान दें ।
↓
प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा 7 वी में 60% से अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी, 31 मार्च 2016 तक अंकसुची की प्रतिलिपी सहित प्रवेश फार्म कार्यालय में जमा करावें एवं 14 से 17 अप्रैल 2016 तक संस्था द्वारा आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्यरुप से उपस्थित होवें ।

: सम्पर्क सूत्र :

आदिनाथ नखाते (अध्यक्ष) 0712–2750290, **अशोक जैन** (मंत्री) : 2772378,07588740963, **नरेश जैन** (संयोजक) 9373100022, **प्रियदर्शन जैन**(उपसंयोजक) 9881598899, **डॉ. राकेश जैन शास्त्री** (निर्देशक) : 9373005801,**विपिन जैन शास्त्री** (प्राचार्य) : 9860140111, **मनीष जैन शास्त्री** (अधीक्षक) : 8087216959, **भूषण जैन शास्त्री** (अधीक्षक)8857868455,**सुदर्शन जैन शास्त्री** (प्रबंधक) : 9403646327

निवेदक :श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरु पुतला के सामने, इतवारी,नागपुर 440002 (महा.) फोन नं. 0712–2765200,6979257

अधिक जानकारी हेतु Log in करें – www.vidyaniketan.weebly.com

दृष्टि का विषय

23 छठवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रश्न – पाटनी गोत्र की लड़की की यदि कासलीवाल गोत्र के लड़के से शादी हुई तो लड़की कासलीवाल हुई या नहीं ?

उत्तर – अरे भाई ! उनकी दोनों ही अपेक्षाएँ हैं। वह लड़की कासलीवाल हो भी गई और नहीं भी, यदि उसे पाटनी की लड़की की दृष्टि से देखेंगे तो वह पाटनी भी है और कासलीवाल की पत्नी की दृष्टि से देखेंगे तो वह कासलीवाल भी है; इस संबंध में कभी समस्या उत्पन्न नहीं होती है कि वह कासलीवाल है या पाटनी ? लेकिन दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं ? – इस संबंध में सभी को समस्या है।

अरे भाई ! जब पर्याय, उस द्रव्य को १. ज्ञान का ज्ञेय बना रही है, २. श्रद्धा का श्रद्धेय बना रही है, जब सारे गुण, ३. आत्मसन्मुख हो गये हैं, सारी ४. पर्यायें आत्मसन्मुख हो गई हैं तथा आत्मा का ५. अतीन्द्रिय आनन्द का झरना भी पर्यायों में फूट पड़ा है और उस आनन्द में कहीं ६. अन्तराल भी नहीं अर्थात् आनन्द की अखण्ड धारा पर्याय में बह रही है।

जब पर्याय ने उस द्रव्य के प्रति अपने आपको इतना समर्पित कर दिया है तो फिर पर्याय को द्रव्य में शामिल होने के लिए और क्या करना है ?

जिसप्रकार सोनिया गांधी ने भरी सभा में घोषणा कर दी कि 'मैं कांग्रेसी हूँ; क्योंकि मैं कांग्रेस में शामिल हो गई हूँ।' अब यदि कोई कहे कि 'नहीं-नहीं, वे कांग्रेसी नहीं हैं।' तो मैं पूछता हूँ कि 'वे कांग्रेसी होने के लिए अब और क्या करें ?' जब सोनिया गांधी ने इटली की नागरिकता छोड़ दी है और भारत की नागरिकता ग्रहण कर ली है तथा भारतीय संस्कृति के अनुसार अन्य वस्त्रों की अपेक्षा साड़ी पहनना भी शुरू कर दिया है तो मैं पूछता हूँ कि 'भारतीय बनने के लिए वे और क्या करें ?'

उसीप्रकार पर्याय द्रव्य में शामिल होने के लिए द्रव्य के साथ एकाकार तक हो गई तथा उसने **अपना नाम तक बदल लिया अर्थात् पर्याय ने अपना स्वर भी ऐसा कर लिया कि मैं द्रव्य हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं त्रिकाली ध्रुव अनादि-अनंत, अखण्ड हूँ। वह पर्याय ऐसी भाषा बोलने लगी कि –**

'अहमेक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइयो सदारूवी।'[१]

१. समयसार, गाथा ३८

अब मैं आपसे पूछता हूँ कि पर्याय द्रव्य में शामिल होने के लिए और क्या करे ? **अरे भाई ! विषय बनाने की अपेक्षा 'पर्याय' दृष्टि के विषयभूत द्रव्य में शामिल ही है।**

इसप्रकार के प्रयोग साहित्य में भी आते हैं कि – राधा ने कृष्ण का चिंतवन किया और और चिंतन करते-करते वह कृष्णमय हो गई तथा वह ऐसा महसूस करने लगी कि मैं कृष्ण हूँ और कृष्ण के कपड़े भी पहन लिये। कृष्ण भी राधा का चिंतवन करते थे, बार-बार राधा का ही ध्यान करते थे तो कृष्ण को ऐसा लगने लगे कि मैं राधा हूँ और उन्होंने राधा की साड़ी पहिन ली। अब पता ही नहीं चलता कि कौन राधा है और कौन कृष्ण है ? क्योंकि राधा कृष्ण के भावमय हो गई व कृष्ण राधा के भावमय हो गए।

अब यहाँ कोई कहे कि साहब ! आप समयसार की चर्चा में बेमतलब ही राधा-कृष्ण को ला रहे हैं। अरे भाई ! यह मैं नहीं कह रहा हूँ, पण्डित बनारसीदासजी ने भी नाटक समयसार में कुब्जा और राधा संबंधी अनेकों छन्द लिखे हैं।

शंका – उदाहरण में दोनों तरफ से एकत्व है, क्या ऐसा द्रव्य-पर्याय में भी है ? क्या वहाँ भी पर्याय द्रव्यमय और द्रव्य पर्यायमय हो गये – ऐसा कह सकते हैं ?

जिसप्रकार वह राधा कृष्णमय हो गई और कृष्ण राधामय हो गये; उसीप्रकार वह पर्याय भी द्रव्यमय हो गई।

यदि पर्याय, द्रव्यमय नहीं हो तो पर्याय में केवलज्ञान ही नहीं होवे। उपयोग की एकाग्रता को ध्यान कहा जाता है और उपयोग पर्याय है। **(क्रमशः)**

शोक समाचार

(1) पालनपुरी निवासी मुम्बई प्रवासी श्री जगदीशभाई चीमनलाल मोदी का दिनांक 7 जनवरी को 82 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देवविलय हो गया। आप अवनीशभाई मोदी के पिताजी थे। आपने अनेक वर्षों तक गुरुदेवश्री के सानिध्य में सोनगढ रहकर तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया। शांतपरिणामी तत्त्वजिज्ञासु जगदीशभाई का पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रति भी निरंतर स्नेहभाव बना रहता था। आप तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से भरपूर उत्साह रखते थे।

(2) करैरा (म.प्र.) निवासी श्रीमती सुशीलाबाई सिंघई धर्मपत्नी स्व. श्री बद्रीप्रसादजी सिंघई का दिनांक 4 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. महावीरप्रसादजी एवं डॉ. शिखरचंदजी की माताजी थीं। आपकी स्मृति में 511/- रुपये संस्था को प्राप्त हुये।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 713 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 86 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेश्वरजी चौगुले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र जून 2016 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **विदिशा में 15 मई से 1 जून, 2016 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

प्राचार्य, श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन :(0141) 2705581, 2707458,
Email - ptstjaipur@yahoo.com

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 37 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेश्वरजी चौगुले, पण्डित ई.जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 15 मई से 1 जून 2016 तक विदिशा** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **पण्डित उदय शास्त्री (मो. 07611968465)**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 17 जनवरी को 'ज्ञानेन पुंसां सकलार्थसिद्धि' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं रविन्द्र जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सिद्धांत शेट्टी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अंकित जैन एवं ऋषभ जैन 'सम्यक्' ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी चौगुले ने किया।

(2) दिनांक 24 जनवरी को 'चारित्तं खलु धम्मो' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सन्मति जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं नमन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण निखिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष की अनुभूति जैन एवं निधि जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 27 जनवरी को 'जैन न्याय की प्रारंभिक भूमिका' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में वर्षा जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं संयम देशमाने (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण साहिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के वैभव जैन एवं संचित जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 10 फरवरी को 'जिनागम के आलोक में नय' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रशांत पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं अनुभूति जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण जी. जगदीशन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अक्षय जैन एवं विकास जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी चौगुले ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के अच्युतकांत जैन, सौरभ जैन फूप ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 24 फरवरी	उदयपुर (राज.)	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन

तिलोयपण्णत्ति का कन्नड अनुवाद संपन्न

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यहाँ चाउण्डिराया मंडप में आचार्य यतिवृषभ विरचित 'तिलोयपन्नत्ति' नामक प्राकृत ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद का लोकार्पण स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी द्वारा हुआ। इस ग्रंथ की हिन्दी टीका का कन्नड अनुवाद टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक श्री बाहुबली भोसगे धारवाड़ ने किया है।

इस अवसर पर ग्रंथ की भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों की संख्या में जिनवाणी श्रुतभक्त मुमुक्षुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में समस्त भट्टारक उपस्थित थे। इस प्रसंग पर अनुवादक श्री बाहुबली भोसगे एवं प्रधान संपादक प्रो. एम.ए. जयचंद्रजी मैसूर को स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने सम्मानित किया।

यह ग्रंथ तीन भागों में शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है, अभी पहला भाग ही प्रकाशित हुआ है। अब यह ग्रंथ कन्नड के पाठकों के लिये उपलब्ध होगा। इच्छुक पाठक **संपर्क करें –** धवलतीर्थम्, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन और संशोधना केन्द्र, श्रवणबेलगोला - 573135 (कर्नाटक) फोन नं. 08277534868

महिला शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ घाटकोपर (ईस्ट) में दिगम्बर जैन महिला समाज द्वारा दिनांक 24 से 26 जनवरी तक प्रथम बार महिला शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अल्पना भारिल्ल मुम्बई, स्वानुभूति जैन मुम्बई, कु. जिनल देवलाली एवं ब्र. वासंतीबेन देवलाली द्वारा प्रतिदिन तीन समय छहढाला, चारित्तं खलु धम्मो, आत्मानुभूति की प्रक्रिया आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचन व कक्षाओं का लाभ मिला। जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन हुआ।

शिविर में लगभग 150 महिलाओं ने धर्मलाभ लिया।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127